



ASHA ARCHIVES

2378



五仙本

2378

ASHA ARCHIVES

भार

१

२ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ प्रणम्य कौ. गणनायकत्वं ॥ रुद्रात्मजं-
विष्णुविष्णुशतं ॥ शंखध्वजलोकाहिताय वक्ष्ये कृपावित्तो-
स्वति नाम श्रुतं ॥ १ ॥ नत्वा मुहुरे. श्रृणु रविन्द ॥ श्रीमातृसता
नन्द इति प्रसिद्ध. तां मा स्वति शीघ्राहिता रथमाह ॥ शाके विहि
ने. शशी ससिपक्षरेवेके ॥ १०२१ ॥ १ ॥ अथ प्रवक्षे मिहि शेपदेसा
त् ॥ तत्सूर्यादिधां तसमं समासात् ॥ शाको नवां दि. दुर्गशा
त् ३१ ७९ युक्त ॥ कल्याणवत्य दगशात् युक्त विद्यन्तो

स्वति

९

लोचनवेद ४२०० हिम ॥ शास्त्रादपि दुःकठिनः सयव शास्त्रा
दपि द श्रृणु स्वन्यादि १००७ युक्त ॥ सागानी ४९ युक्तो यस्य
ते ४०० विमक्त ॥ लब्धव्यो ७ सेवितमंगद युक्त ॥ सूर्यादी
संवत्सरपालक इयार् ॥ सेवंहरे ४०० प्रो ह्यपयार्गजाशा
१०८ लब्धव्ये रवे रौ दहिको कृवणार् ॥ सह अ १०० निष्प्रस्ववि
७० निमो ध ॥ ससिच २४० भागो नमचक्र २७०० स्यस्य

भा.
२

रवय ५० संयुक्त दश १० अशुके ॥ चंद्रा ४३॥ नोना न्यधिकः
शशांक ॥ रुद्रा ११ नोवेद ४ युतस्त्रिवेद ४३॥ सेखं चतुर्वेद
पुणो १३५ ३२ पृथग्गवागा ७०० प्रयुक्ते दुकेन्द ॥ अशुके ५॥
गो वनरा २० शयुक्त ॥ केंद्रा ११ आदि युनेत्र चडे १२५ ल
धोनि तो मध्यविधु कुवस्या ॥ पातसः ४ ५ द्या नगनेत्र २७ यु
क्त ॥ स्त्रि नंद ५२ सेषो गगनागति ६० ॥ विहिंदु रामा ३१ खरा
महि न ॥ सो सो ववदाह पुनरं गवडे ३६॥ देशांतर दिग्गती

६४

स्वति
२

ताप्रशा ५॥ मिती हक ल्यां तसो क्रवस्या ॥ अवर्त्ता देसा युत
यो जगती ॥ शं गु नवाने ५ २ स ६ भाजि कानि ॥ हिगाधि का न्यं
गगा रेव २० ६ चकुर्वा आया कुवे दे ४१ फलमंगु लानि ॥ स्व
देश जाया विधुवस्य भास्या ॥ पंचातु दशां २६५ तदितांगति ५॥
सप्त १०० ममक्तं मवति हलव्यं ॥ देशांतरं सूर्य ससां कर्कडे
॥ रवेश ७ कलापुक्ती रवतंदा ५० विधो एता ॥ शती १००
अं डे स्यवे न्नी राहो अरव जिना गति ॥ ॥

नार
३

~~अथ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥~~

॥ १ ॥ - ८७ - ॥ त्रिसद्व ३० गुणानि खमुकार्क मासा ॥ दिनेः शमता
अनुवाशरेना द्रव्यं दमेतं नाभक्तस्य खा ॥ वारोऽव वं न्य द्रमुखा
पुनाथा ॥ चंद्रा १ श्री २ वहि ३ युग ४ भूत ५ रेसा ६ श्वि ७ तर्क १॥ वद
६ भूत ५ वान ५ विरुधा श्रयथा क्रमेन मेरुगानी राशी सुरव
रामगुरो ३५ बुदेया श्रय्य श्रय्यासी यद्यः प्रदेया ॥ पृथक्शता १०० ३
प्राक्रम श्रयं ड ॥ शेखा श्रमुक्तो नितभोग्यनिघ्रा ॥ दत्ता १००

स्वति

प्रगक्तो अधिक स्युत स्यात् ॥ श्रय्य स्यापं वा ५ क ९ रवि १२५ १४
अपा १६ वना १७ नवेऽनु १९ कुयमा २१ जिना श्र २४ सप्ता श्री नो
२७ वदुगुणा ३१ रसागो ३६ द्वा श्री श्र ४२ ताता ४९ दिशरा ५७ स
रंगा ६५ पंचाद्रो ७५ वेदाजा ८४ कुतां न्य ९४ त्रिष्यं द वो
३ भातु न्वं ११२ कु सूर्या १२१ ॥ अक्षा श्रि चंद्रा १२६ सररा
मचंद्रा १३५ ॥ चंद्रा श्री चंद्रा १३१ श्रवजिन श्र १४५ ॥ रूपा रां वि २
गुणो कु र्या त य ध्व ज न्न कालिका ॥ सूर्या दयादि दष्टि का

भार
४

विलिखे च न रा पुन ॥ शोक्तमार्गे स्मृतं कर्ण्य ग्रह सार कालि
लिका भवेत् ॥ योग्या इत्यशु पु रा १०० द्वा ता प्रं ॥ श्रापान्ति तं
स्यार स्मृतं शुभ्य नूक्ति ॥ खनं द ५० निष्पीलित यः स साके ॥ के
देशत १०० घ्राति थयः प्रदेया ॥ केन्द्रे क्रमात् खट सर शप्र द
से २७५६ सोसि ह धो वि धु श्राग सश वि दे से ॥ यावत्
क्रमात् केन्द्र गति वि सो ध्या ॥ तावत् स्मृतं दे पि शोध नि ध्या ॥
हि शोध चन्द्रे न सतं तु २७०० दत्वा ॥ सो धो वि धो तत्सम मेव

स्वति
४

कार्य ॥ ईदु द्वा वृ द्वा त् सहितः ख सूर्य्या १२०० चरार्ध भागा
नयुत स मा धी त् ॥ चरार्ध भागे वि यु मा दि मा से ख ० चं द
१ नेत्र २ दण २ चं द १ रवां सा ॥ पुन द्वा वृ द्वा त् गग गो तु ५० ल
धं शि तं शु के दे तु पु नं प्र कु र्या त् ॥ तत्पु न्य हं स्युः सत स श
खं द ॥ भोग्यो द्वा वां शा अध न स्फु ट स्या त् ॥ इन्द्रो ख रु पा १ ग्री ३
र सा ई ख वं द्रा १० नृपा १६ जि ना २४ चं द गु रा ३५ र सा ग्नी
३६ व द्वा ई ६० स रा गा ७५ कु न वा ८१ व का का १०६ व द्वा न

भार
५

को १२ दशममनु १४३ नवाहा १५९ पचां बुदा १७५ परवंक भुवो १९०
हीखासि १०२ विखास्ती ११३ जात्या श्री २२२ खाम दसा २३० पया
गी दुक २३५ गोत्री यमां २३७ कुशि द्रा २४१ नेत्रा वी दुक २४३
वह्नी जी तो २४३ स्त्री शी द्रा २४३ तु नी त व त्या ९० चित भोग्य मि
दो ॥ रको न च द्रा स्थि य ख न दे ९० ॥ सेको न खा का ९० गगना
ग ६० नि द्रा द् ॥ अ न्यं त रा प्रा य तिका न वंति ॥ सना प्र १०० नृ
क्षं शत १०० शोचि तां ला ॥ व द्या ६० ह ता न्ने नी ह ता न्ना द्या

स्वति
५

सुवविदो युतिन भुयोगा ॥ शप्रा चित्त श्रुगति सुहार ॥ अर्को
न च द्रा अत रा द्वि हि ना ॥ तता दिका द्या ति थी व न् न वंति ॥ प
रे दले क ह स तु र्द शी या ॥ ति थ्य ध न्ना गो ॥ श कु नि अ तु ख्या त् ॥
नां वि किं तु प्र मि ति क्र मे न ॥ च त्वा रि वी द्या क र्णा नि शि
त्यं ॥ दि ने दि ने ह र्ग रा ह प यु क्तं ॥ श प्रे वं ७ सूर्यो व ख न द
॥ ९ मि दो ॥ ख र्वं द्र १०० कं डे तु यु तं प्र कु र्णा त् ॥ प्रा रो स्त
ति का र्य ति थी प्र शा ष्यी ॥ ॥ इति श्री पंच शी चां त सा रे

भार
६

ना स्वर्गिक रशो पंच ग्रामय नाम धिकारो दि ति यो ध्या य ॥ २ ॥
शास्त्रारशोरा दगगा क लेर्वा ॥ वरर्वा धि का स प्र ॥ हता व
सेषा ॥ अत्रे इता व स्यो शि सूर्य शो म्य ॥ शरो अरा रा क्रम
शो भवंति ॥ रवे प्रवं शो धा कु पंच वा शो ५५१ ॥ चडे युतं लो
मकुनंदरवा गी ३० ५१० ॥ नंदा डि षट् रु ५ ६ ७ ॥ युतं व के डे
यो मां क पक्ष युग द क च पाते २ ५० २४ ~~...~~
~~...~~

स्वर्गि
६

अथार्क १२ निप्रो रविमा शयु क्त ॥ श प्रा ७ वसेषा रविमा श मा था
जशु क्र अर्वा र अरे जशोरी ॥ चंदा युगा सा वन मा सतो मे ॥ अ द म
थ क रवेश १०० गगा शरं गा ॥ रामा क ५३६ ५ ल व्ये डि य वं द १५ यु क्त
॥ तत्तु वधि शे ६० वा दि सुभि यु गती ॥ ल धानि सेषां गी १५ : समा यु
॥ अवे शे व गु शो १०० देवा पंच वं द रु लोचना २५१५ भा स्वर्गिक
रशो का सधिति मिहि रो दि ता ॥ शास्त्र व पि न्यो व सु वं हि व ६३६
॥ शशीतर स्त्री ज्वलतो माहि ज ३१ ॥ शता १०० हत दा द स रा शी

भार
७

ब्रह्मे १२०० शेषो ८५० वार्षी ५४ अयुतो यद्वंदात् ॥ शेषे चरवरा
वि २०० अमरकोदश १० अयु ॥ तिथिदु ११५ लब्धा गरसाभि २
दिदिहिन ॥ शता १०० हन्वध रवनवा प्रलेत्र १२०॥ स्तु र्या ध्य १२ जीवो
दनया २० संयुक्तो ॥ खेरुसोर ७५० आ कशराग्री ३५६ युक्तं ॥ श
त्यवना ध्यं कुनपै १६१ शत १०० आत् ॥ खेवेद ४० निद्रो विवेनेव
५६४ युक्तं ॥ शनिदश आत् १० सहित अशकै ॥ भैम्य द्वाग्रीरसा
पलेक शहि ता ६२ ता १ शवा ऊ रागो दवः शप्रागी १६२३७ अयुता

स्वति
७

गुरौ शशी दिशो नंदा ००१ ५ द्विरे वैकुंठे ॥ शुक्रे वो मशरा डयोग
गुणा युक्तं ७५० ३७ शो रेखवे दपले ४० ४३॥ लोका ८५० रवनव दये
जितयुता २०० २४ सहोगत्यवात्तरे ॥ शाका द्यो गुणीत्य रामे ३ भु
मि श्री गुणी ७ नाहता ॥ रवादि क्रमतो राजा मंत्री तस्य चतुर्थकः ॥
शाकोरसाग्री ३६ संयुक्तो वसुमी ८ नागना हरेत् ॥ अनेतादि क्र
मेनेव वा द्यो नागा प्रकिर्तिता ॥ अनेता वा सुकिपन्न महापन्नश्च
तक्षक ॥ कुलीरक कट शंखः आ द्यो नागा प्रकिर्तिता ॥ शाकश

भार
८

सांक १ संयुक्तो मुनिभिर्नामाहरेत् ॥ अथ हादि क्रमेणैव सप्तवाता प्र
किर्तिता ॥ आवह प्रवह चैव संवहो विवह सथा ॥ उद होनि वहो वायु
श प्रवाता प्रकिर्तिता ॥ शाक शरणी संयुक्त वेदेनैवा वशेषिता ॥
आवर्तवृद्धि संवर्त पुष्करे दो नमंबुद ॥ आवर्तनिर्जलो मय सवर्त
वायु रुद्रगम् ॥ पुष्करे दुस्करा वृद्धि दोशो शस्या वति महि ॥ युष्मा २
जो १ मिनागे १ श शके ॥ रवि यदा कर्कट कं प्रयाति ॥ जलं शाक
१५० ऊर्हिका कुंकेड ॥ सुकंहिक न्या म्या योर शिति ८० ॥ कुलीर

स्वति
८

कुंभालितुलागते दे ॥ दृज्यं च विरं दु वति स्मदाति ॥ शमुद्रे श दश
१० भागाश्च यद्भाग ६ चैव पर्वत्य ॥ पृथीकां चतुरो ४ भाग संम्य
उवर्त्तति वा शव ॥ दश योजन विस्ति र्ण योजन मायत ॥ आरु कं
पुवि जानिया यन वरी ति वा शव ॥ गुणो न ३ गुणितं शाक स प्रभी
७ भागमाहरेत् ॥ दोरं यमा २ हतं कृत्या पंच ५ तत्रैव योजयत् ॥
यथा शाकं तथा लब्धो यस्य च पुर्वो सवत् ॥ मेघो धारो तृन
चैव शीत शैव समीरम ॥ प्रजानां च तथा वृद्धि क्षयो च नृपति

भार
९

धर ॥ इति नवशशाखा ~~...~~ ~~...~~ ~~...~~
~~...~~ ~~...~~ ~~...~~
ना यवशाका बजो मुकु ॥ शाको वेदे अगुणीते ४ पर्वते ७ भागना
हरेत् ॥ श्री २ द्योते अगुसं यो ज्ञा ॥ ६६ धाया नम सो भवेत् २॥ ६६ धा
१ रुवा २ तथा निं द्रा ३ आलस्य ४ अमर्ष च च ५॥ शांति क्रोध ६ सत्ता
लोभ ७ आल ८ लो अमर्ष च ९ ॥ शांति १० क्रोध ११ सत्ता लोभ १२
उत्साहस्य १३ तथैव च ॥ निरसो १४ मोरस शैव १५ पाप पुं राय चतु

शक्ति
९

दशा विक्रमार्क नृपकाल भागी भी ॥ अगुणा विषयी समन्वीतं ॥
आदि ७ शेषम लोके शब्द देवता दत्त जनितां अनाश्रमं ॥ अश्वि
२ वेद ४ हार ५ वह्नि ६ निमह ॥ ज्ञायेते खलु सुभीक्षुता मं च द्वा
द्वैरक्त विदुः पयोधर ॥ अं द्र १ गोत्रपतिभि ७ नयं महत् ॥
ईति श्री पं रसि गांत सारे नासोति करणे ग्रह क्रवा वि कार रहितो
प्याय ॥ ३॥ ॥ मोमस्वर ७ आ अगुणा ३ कृता ४ प्र ॥ पुन अ
हदार त्रिशता प्र ३०० हि न ॥ अक्षर ८ शिखा खखर म ३०० निम

भार
१०

पक्षाधि २२ श्रीशोमशितस्यशी च ॥ गुरुगुण ३ आ जगुणा दशा १०३
वेदा वधीवी ४४ लव्यवि वर्जितश्च ॥ वेदो ४ ह्यो धो ३ गुण भाग युक्त ॥
शतस्यशिशुं सहिश्च शत्रे १४० शनि ईद वदात् नव ८ भक्तल वध ॥
क्रवा न्निता रयद यस्तमश्च ॥ भवन्ति जीवा र्कजभू मिपुत्रो ॥ जभार्ग
कोशी युगति भवेतां ॥ दिग् १० द्या यता रवतां श ० हिना ॥ स्थिनी ४
गुजो र्कि कुजे जेलिपु ॥ अष्टे वषट् नंद चतुशता र्ही ॥ ६०० ॥ ५०० ॥
६०० ॥ ६०० ॥ ४०० ॥ एतद् गुहाय तु भव रवेकं द्रा ॥ रुद्रा ११ नवेड १८

स्वति
१०

दियमा २२ न ११८ ॥ ४१ ३ वेदु १८ रुद्रा ४११ भोगो द्व वस वयुक्तहि
न ॥ यता १० ग ७ नाग ८ त्रेय ३ सूर्य १२ निद्रा ॥ दशो १० कर्तृहिन धनचम
ध एथक स्वशि द्रो चित्तके ड व द्रा २० ६ स्त्रि ३ द्यात् नव १० ३
स्वशि द्रो नयुत सूरत स्यात् ॥ पंचरसि स्थितो यत्र स्त्रि २ ॥ ८ ॥ १
धु ३ तत्रैव कारयत् ॥ गृहा स्वशी द्रो नितका यदा स्यात् ॥ ३ ॥ ६
दने धने वा सरसि संख्या ॥ राशि विना का त्रिगुणात् ४ ॥ ६
तदा ततः सि अफल प्रशाध्य ॥ भौम स्वखा वधी ४० ना ५ ॥ ५
सप्त ७ ७ मेखा १०० ६ वेदु १३३ जाते दु १२२ गगो ६ ॥ ३ ॥ ३

भार
११

धर्म ॥ शक्र २७ मानी ४३ कुश ७१ रवतस्वरा ६ स्त्रियं ४५
मानी ३७ नवे दव १२ स्मृता ॥ गुरो नपा १६ रवानी ३० गजत्रय ३६
सदवं ह्यो ३६ रामयमा २३ नृपांका ११३ भोगो दिवेदा ४२ कुग जा
६१ स्वसु र्या १२० लो माह १५० नागे दु १४६ नभु स्त्री १२० डो ला ७३॥
शरी दि शो १० व्या कु यमा २१ नवे दु १५॥ दि भु मयो १२ मंगल म ५६ य
॥ रवेश्वरा ७ रवत वति ६० रव मि दो १०॥ के दे शतं भू १००११७ शत संखति
को २॥०॥ पा दो न द क १॥५५ राम यमो ३१ ७ रव मे द्यो ०११७ न्य व्यो रव श प्रा

स्वति
११

वनि जाति कानां ॥ ७ ३ त्रयो यमा ३१७ विस्व इ भाग य १३१७ ॥ रणी
त्रयो यमा ३१७ पवन रवा ५१२७ गुणा व्या ३१७ कु जा दि शी पु स्य च भु
क्त यो भू ॥ रुक्मा स्मृति से र्गत प्र वि रो ॥ यमा १७ ग ७ नाग ८ श्री ३२ श्री
१२ पु भु की ॥ भोगा हता या सरवता १००० प्रलब्धं ॥ उने नुरवं दे श हि
तने यो ना मंड स्फुटा भु की शि यं कु जा दे ॥ मंड स्फु टा शि पु गते वि
स्व ध्या ॥ प्राग्वत् कृता भाग्य हता सता प्रा १००॥ वहु ला भो गो स्वमृ नं
यथा स्या ॥ वक्राति वोर विपरीत शो ध्य ॥ भा दि कृत ४ प्रा ६

भार
१२

होतुहसु ॥ रास्यदिरेके ८ गुणीतकता ४ पुं ॥ भादिर्न वे दू भादि सुगती
हार ॥ सराः कृति २५ रासि सुयात संतं १०० च ॥ विधा १२ श्वि २ गधर्व
दशा १० ग ६ मासे ॥ चक्रार्द्ध के द्यातिथि जाति बुधं ॥ बद् बहू यो ३ ६
वा दश १२ राशी भाथा ॥ वेदा ४ श्विन २ श प्रसा ६ क्रमेन ॥ स्वसि प्रके
ड सेतु मंडला क्ति ॥ पूर्वा परा वक्रगता सरा स्य ॥ बद्धादि ६० नूपाक १६
गुणा ३८ कुद आ २१ ॥ अक्रादि त प्रक परतो स्तग स्यात् ॥ एवं ज नृ
वृत्ति वसुप च बद्धा ॥ प्रागुगा ये तपरत्व धिका क्ति ॥ ॥ भौमो ग द्दती

स्वति
१२

कक्रतां अचीशर रतो स्वसि द्यो चीत्य ॥ तद बंद अत्र यो दशमनो
७१३ जीवोरी बट ७ ६ ६ पर्वत्य अक्रे रेखुर शे ६५० खगं सुत्र नयो ८०
बहि डनो पुन ८१३ को बुले परी हत्य गो पुष्कर गतिर्मर्ति नवे य्छो
धते ॥ भो स्तं द ह न ग्रहे ८३ ख जल दे शो १७० म्योरी वे दे ४ ६ गुहो
को मा द्यो ८० नृगु जोय म्योरी पुर शे ६ ६ कं डे वृशी प्रो नित्य ॥ ल ४ वलं
शशी जम्बी पं नासे ६ ८ का द्दारी पो ६ १० भाग व ॥ तस्मि चक्र विमो
धिस सपु दयं याति क्रव रे चरा ॥ ॥ पल प्रभात त्व हता खरवा के

भार
१३

२००॥ युक्तासुताके न समा यदि स्यात् ॥ याम्यां तदा स्या दुदशानि सां
ते ॥ भुगोराग लस्य सुग रिहनु ॥ अवंद मय्या हत मंत्रदि ग्नी १०॥
लव्यं कवं युग्द लीतं तु वक्रात् ॥ ससो ध्यत्य रादुरवी प्रति
पात् नक्षत्रगोरा सिगत अत दत् ॥ पावा स्तर ॥ पात कवा ड
ऊगुणात् कृत द्या ॥ दशाप्र युक्तो भाता न्यज्यत २७००॥ राऊः
सदा वक्रगति स्युत स्यात् ॥ नादि लुचक्रा ड यदि सुपु ६ ॥
म कवं कवं केद स्य सिधु केद स्युट ग्रहं ॥ कर्व सिधु तरे

स्वति
१३

न
कुर्यात् दशासिधे चिके पुन ॥ ग्रहे वंद गले मार्ग पाते चक्रा डके
पुन ॥ अहोदयं धनमृत्नं वेत्तयं पुरा चक्रके मीमे स्वगते अद्रे श
ततं द क्षी री नर ॥ अ न्य चोत्तर शृंग स्य समत्वं वषकुं भयो ॥ वि
ज्वरस्य समे वंदे दुर्मि क्षमरनं भयं ॥ इति रोग भयं वैव सुभि क्षं चो
नरं नरे ॥ ॥ इति श्री पंचसिधांत सारे भास्वतिकरणे ग्रह
सुतादि कार वतुर्थे ध्या य ॥ ६ ॥ ॥ शके इकाल वसरा
विबेहिन वद्व्या ६० प्रसं स्या अयन संखा स्यु ॥ अहर्गते रीवा

भार
१४

युगेनेवकास्यु ॥ नेवेदुयंदा अतिशो प्रमाणे ॥ कृपादि वेदे ४२१
रहितं दुकाया ॥ दिशो धयदु न्यनमोगरामे ३६०० ॥ स्वलाहस्व
किपाई बुतादि नकात् शायन १०० लव्वा अशना सकास्य ॥
दिदं दत्वगा ककुभी १८७ गजा बुदे १७८ स्वलेर्गतेर्यो नरदधी
नेतु ॥ ततरवशमे ३० अमथ अदध्या शार्धसद्यं वदलं वर
ई ॥ पलप्रभायं सरवत् यमा २६५ प्रं ॥ पयंडु तस्त १५ स्तमृतां
वगोलात् ॥ अहर्दलं वस्तमरा नि साई ॥ तयोर्गते व्यो नरि

स्वति
१४

तनोव ॥ वद ६ प्रचरई दशभागहि न ॥ याम्याहिरामां सुयुतं द
शा १० प्रं ॥ ददधीहि नाक्षिविद्युत्त युक्तं ॥ मारो रुदग्द सि न
न प्रभास्यात् ॥ द्वाया दशद्या १० शतशो युता च ॥ मध्या प्रभो ना
मयतिह शंकु ॥ शता १०० हताहर्दलत सदा प्र ॥ महर्दमे व्यो द
निकादिकाल ॥ रवरेदु १०० निद्रा द्वादला गते व्यो ॥ नाप्र प्र
मध्य प्रभया समेतं ॥ शत्यनितं तदशनी १०० भक्त ॥ लव्वां गु
लाद्रा भवति सिताभा ॥ लानं सुसुर्ग्य दयत प्रशा ध्यं ॥ स्व

भार

१५

जोदयेः शोरदिना गिणाता ॥ सपक ॥ संगुं राव स द्या ६० नयुनं स
सा सा ॥ गजे ८ विभज्या ८ रवो ज्यो ज्य ॥ शरा श्वे तु मे २२५ विभ
वत् प्रलब्ध ॥ नलादि पेट स्यो दयका कयादि ॥ शगु रौ भो गो
दयके न स्य व ॥ विभज्या पका श्विय मे २२५ प्रलब्ध ॥ सुको दये
के शहित प्रकुं र्या ॥ स द्या ६० विभज्या प्रफले नु यु न्ता ॥ सु
र्या दया प्रायति क प्रकुं र्या ॥ स द्या ६० विभज्या प्रफले नु यु
न्ता ॥ स द्या श्विको रा रवर से ६२० प्रगु राय ॥ तत कयादि नु द

स्वति

१५

शात्र प्रसाध्य ॥ नुन्ता कंगु ल्यो दय नं वि च्यं ॥ स्य रवर व द्यादि
गुण विभज्य ॥ भोग्यो दया प्र नवति ८ लङ्ग ६०० जा मित्र संगे
कथित मुनि द्वे ॥ लंको दई पुर्व व दे व साध्य ॥ स द्या ६० विभज्य
ति थयो दिनं तत् ॥ स्यात् प्रा कू कपाले नते नहिन ॥ सुक्तं प्रकुं र्या
त न्द परे नते न ॥ तत् श्रुते यन्न तत् प्रयो ज्य ॥ स द्या ६० पुन स्तत्र न
तं विभज्य ॥ लंको दये स्तत्र पुन प्रशाध्य ॥ मध्य प्रलङ्गं प्रथमो
क्तमो मध्यं विलङ्गं रसभं २७६ प्रयो ज्य ॥ पाताल लङ्गं मुनयो

भार
१६

कदंती लानं वगुर्थे च सुरवं कलया र मध्या च जासी च कनं
विशोध्यं ॥ रव भं विलगा कविल चमेखं ॥ अस स्वकि यं न मन
प्रयोज्यं ॥ भावदयो रीग दलसु संधी ॥ प्रगु स्थीतं स्या दफलो
बुहदु ॥ बंदादि २१ निगा पलभा वधीता व ॥ लंका व ध्य स्यादि
हृद क्षिणाधि ॥ दि २ गुणा विवुव र्छाया विभज्यत्न मस
स्त्रीधा ॥ अर्का १२ ह १५ रवगु री लं चं चरख डा विनादिका
वस्वर्ध २७४ नंदनं दांश्चि २६६ स्त्रिरदा ३३३ अक्रमरु

स्वति
१६

मातृ ॥ चरखंडो नितं शुक्तं विनामो जातको दया ॥ इति
श्रीपंचसिंहांतसारे ना स्वति करणे पंचाधिकारे नाम पंच
मो ध्याय ॥ ५ ॥ ६३३ ॥ दि २ दोर वि १२ पर्व कृत्वा ७ प्रयुक्तो
दिगु १० त्रिक मो क ८ अदिना कृत्वा ध्य ॥ तमो युता की र
रव रवभा ॥ २७०० प्रदीप्य गाम्यां शरो ल्या स्व दशा सहिन ॥ मय
नहिमां सो गतिर गी ३ हिन ॥ दि द्या १५ चतुर्भि ४ अमन
प्रमानां गमो गतो कं सरवर्जितं च ॥ ग्रा शा अ द्रा सो सुग

भार
१७

पर्वशोधो ॥ स्वदादशां सो १२ वित्तमर्कमानं ॥ स्वजाति भागो २२
नितमी दुशानं ॥ श्री ३ देव दुभोग्या दनया नितोर्क ॥ भोग्या
मी भागो नविवर्जितो गो ॥ स्थित्यर्क मंगा सतमिंदु खं राड
खं व ॥ युक्त खंड विखंडितं व ॥ हिनं धनं पर्वनि शितरस्मी
॥ यस्य यथु की अतादि द्वादश काल ॥ ग्राशां दि संती २० गुणानि त
स्युता नि जमाने न भाजीत विश्वा ॥ ग्राह्यो न खं द्वादश
शं गुणा च ॥ खं व ५० युक्त खंड फलं वि मर्द ५० हिनं धनं

स्वति
१७

पर्वणि चंद्र भागो ॥ त्रिमिलनो न्नी लनना दिकास्यु दि द्वाद
शं च जासी त्रे सम राशी पाते यवा तथा वत्सा द्वाद के चैव ग्रह
नं चंद्र सूर्य यो ॥ ॥ इति श्री पंच सिद्धांत सारे भास्कर
करणी चंद्र ग्रहणा दीकार नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥
मत्तदश १० आजी न २४ युक्त मत्ता प्रं ॥ तलं वन तेन युते न तं व ॥ तलं
क ५० नि द्वा न युत स भागो ॥ प्रति प्रति द्वा अ सर प्रशाधे
तलं क नि द्वा यु मत्ता धि कोर्क ॥ दर्क शत द्वा कृत पंच

भा.
१८

दिया ॥ तद्वर्गं कहि ना दथवा कहि ना ॥ दो वेसरे दगुगी ते सु
दल्यं ॥ एथक सरस सा १०० धिकरुड ११ भक्त ॥ सतदक्षिणीया
नरितं नत स्यात् ॥ तलेवनं दि १० गु शित गुला ॥ हि नधनडा
कपरिगो एवरो सो ॥ ततस्तसं सं प्रयुता दुरा स्यात् ॥ दुरावनं तेत
रदु क् सुस्त स्यात् ॥ माने रे नोप युता गनं द ॥ तद्ग्राहको
कास्थी वयववं ॥ ग्रासा ३१ ४ पूर्ति सवितु एवरो मे २० ॥
ग्रासां कल ५५ स्थिति मर्धका ॥ ईति ह सु र्या ग्रहो वी

स्वति
१८

कार ॥ तज्जंवनं दो न्य म्परां विधा य ॥ याम्या धनं पर्वनि ति प्रभा
ना स्थित्यर्द्ध केहि नद्युतं प्रकु र्यात् ॥ स्य सर्व थ मुक्ति आन
वेदिन स्य ॥ ॥ ईति श्री पंचशि ज्ञाते सारे ना स्वति करणे
सु र्या ग्रहनादि कारे नाम सप्तमो ध्याय ॥ ७ ॥ ॥ एवरे व
वेदा १४०० धिकभा स्तरस्य प्राग्वर भवका २००० प्रदिश
सरस्य तद्वर्ग १० भाग स्य कृती अजा दो ॥ याम्या तद्वर्ग
दथय कृति व ॥ कृत्यो सुतु ल्या नादिश कृमेना याम्या तद्व

भा २

१८

कारल ना विन्दो ॥ माने सरा दे रत्नत रूप व ५ ॥ ना गो न दिग्
१० से व हता गुलाभा ॥ चंद्रार्क मानां गुलसं गुलाभा ॥ खडा गु
७०० मन्ना बलता गुलाभी ॥ चंद्रार्क यो दिग् समभं दुलस्य ॥
सत्ता मसव बलता गुलस्ये ॥ मध्ये दुदग्द क्षिप्त ग राहं व ॥
रत्नमो द्वि सुवे राश्विंदु मंदा ॥ वलन प्राद्यु रव देणा तदि अ
पेकता यदि ॥ मे दे प्रत्य द्यु खंडे ये मिंदो नातो विपर्ययात्
॥ स्थित्य द्विती पुं रस ६ वेद ४ मन् ॥ माना गुले आक परयो

स्वति

१८

स्तदग्राह ॥ स्वर्गो धनुनि स्वर्गं यथाव ॥ निमिलनो न्मील
नके नवंती ॥ ग्राशा गुल प्रह्न हतं स्थित्य द्वि नवि नाजितं ॥ ल
५५० द्रजा गुलं ग्रा ॥ श्रीमाधवाय नम ॥ आदोमिन स्वरूपं
दक्षि मथन धृक्को लरूप त्रिरूप ॥ देव्यारि नी रसिंहि व
लोम थनरी पुर्जामद्यनी स्वरूपं ॥ रामो लंका विदोरे वसुतानय
वधो वो ज सत्त्वा वतर्ह ॥ श्री श्री श्री कलं क्वावतार् दशविधी
शहितं माधवं त्वा नमा मी ॥ हे हे ज स्वदे तव बाल को दो मुगरी

भार
२०

मोमो वसुदेव सुनु आद्यवस्था नरनं मादि यं ॥ गतो गिदरे ज
उगाति कुजे ॥ करारविंदे नगदा रविंदे ॥ मुखरविंदे विन
विशयतं ॥ बटस्य पत्र स्य पुते सखानं ॥ बालमुकुंद मनसा
स्मरामी ॥ समो जया सा न रा ~~न~~ नतः ॥ खरवा शिवे वा
युग ४२०० ते गुणाये ॥ दिव्यो नित्य श्री पुरु खो त म स्थ ॥
श्री मा र स गानंद ईति ददाह ॥ सरस्वति संकर यो स्तनु
ज ॥
॥ ईति श्री पंचशिखांत मोरे नास्वति करणे ॥

स्वति
२०

परीलेखा धिकारी नाम अष्टमो ध्यायः ॥ ८ ॥ ॥ ८ ॥ ८ ॥
श्रीनेपाली सन्वत् १०३५ श्री साके सन्वत् १८३७ श्री वि
क्रम सन्वत् १९७२ साल मित्रि भाद्र शुक्ल २ ऐश्व मा
लेवी श्री ध्या को ये मास्वति को पोस्त फ सहर भाड गाड भा
रावा चो दो ल वरमा तुली दा म जु जु ले ले या को हो क
डो ले लो भावी पापा नी गरी धाति दली दवाई दवाई चो ही लीयो
मन्या पंचमा हा पा तक लाग ला ॥ ॥ शुभ ॥ ॥ ८३ ॥

॥ यदि श्रद्धो मम वा वा मम दोषो न हि सत्यः ॥

॥ ० ॥ - (०) - ॥ ० ॥ - (०) - ॥ ० ॥ - (०) - ॥ ० ॥ - (०) - ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

भार

२९

स्वति

२९

आशा मरु काथि
2378
ASMA ARCHIVES







2378

ASPA - 10/1/1965